# 'वेद विज्ञान में प्रजापति का स्वरूप'

पृथिवी के चारों ओर वायु है, पहली वायु मिट्टी का भाग जो कि बारह योजन तक है दूसरी परत में सूक्ष्मवायु है और तीसरी परत में और भी सूक्ष्मतम वायु है। जो तीसरी परत में सूक्ष्मतम वायु है उसी से हमारी आयु का निर्माण होता है।

प्रस्तुत लेख वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में किये गये गम्भीर चिन्तन की ओर ले चलता है।

प्रजापति के स्वरूप को जानने के लिए तीन चीजों का जानना आवश्यक है। वेद, जिसका सम्बन्ध मन से है, यज्ञ जिसका संबंध प्राण से और प्रजा जिसका संबंध वाक् से है। प्रजापति तीन भागों में विभक्त है नाभि, मूर्ति और महिमा। वेद भी तीन है ऋग्, यजु और साम। ये तीनों ही तीन-तीन प्रकार के है-रस,छन्द और विदान्त।

रस के भी तीन भाग है महोक्थ, महाव्रत और अग्नि। जो पदार्थ में से प्राण भाग निकलता है वह महोक्थ है जो प्राण भाग वस्तु में क्षति पूर्ति के लिये आता है वह महाव्रत है ये दोनों भाग अग्नि बनते हैं। अग्नि से ही वस्तु का स्वरूप बनता है चित्य अग्नि मूर्च्छित है इससे वस्तु का चयन होता है चित्य निधेय अग्नि जागृत है यह अग्नि ही यजु कहलाती है। कुछ आचार्यों के मत में आदित्य अग्नि ही मुख्य है दूसरे आचार्यों के मत में वायु मुख्य है। यह यजु ही संवत्सर अग्नि के रूप में ऋतु उत्पन्न करती है। अग्नि से ही महोक्थ और महावृति की क्रिया होती है। मन नाभि में रहकर प्राण के द्वारा वाक् का परिणाम उत्पन्न करता है। जाते हुए अग्नि प्राण में मन और वाक् भी जुड़ जाते हैं इसे ही ऋग्वेद कहते हैं। जो प्राण नाभि की ओर जाता है वह सोम है। इसे ही साम कहते हैं।

साम का प्रस्ताव अनेक है निधन एक है क्यों कि सोम की परायण भिन्न भिन्न दिशाओं से आती है किन्तु एक ही केन्द्र पर आकर समाप्त होती है। साम प्राण रूप है इसी के कारण अग्नि के निरन्तर निकलने पर भी वस्तु का स्वरूप नष्ट नहीं होता इसीलिए यह देवताओं का भोजन कहा जाता है।

ऋक् और साम इन्द्र के घोड़े हैं सूर्य में इन्द्र है जो ऋक् के द्वारा ही पृथ्वी तक आता है इन्द्र प्रकाश का देवता है ऋक् और साम को सोम पीने का पात्र भी कहा है। ऋक् के द्वारा जो अग्नि की कमी होती है सोम के द्वारा उसकी पूर्ति कर दी जाती है। ऋक् और साम यजु में ही लय होते हैं यजु से ही उत्पन्न होते हैं और यजु में टिके

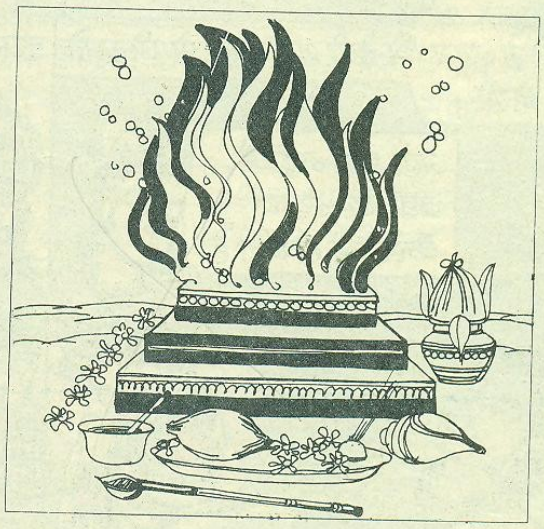

हुए होते है। सोम ने अग्नि की स्तुति में यह कहा कि अग्नि स्वतन्त्र है ऋचाएं उसी की कामनाएं करती हैं। साम भी उसी के प्रति दौड़ता है सोम का कहना है कि वह अग्नि से छोटा है क्योंकि अग्नि अन्न है सोम अन्न है।[१]

ऋक् यजु और साम तीनों वेद वाक् रूप हैं इनमें प्राण प्रविष्ट रहता है यह प्राण तीनों लोकों में है अत: इसे त्रिविक्रम कहा जाता है। यह त्रिविक्रम यज्ञ रूपी विष्णु है, पिण्ड का मूर्ति भाग पृथ्वी है इसमें अग्नि रहती है। पृथ्वी से निकला महोक्थ अन्तरिक्ष को पार करके द्यौ मण्डल में पहुंचता है किन्तु महाव्रत अंतरिक्ष में ही रहता है। क्योंकि मूर्ति में प्रवेश करने के पश्चात् वह अग्नि हो जाता है। अत: पृथ्वी का अग्नि, अंतरिक्ष को महाव्रत और द्यौ को महोक्थ कहते हैं। इनमें महोक्थ ऋचाओं का महाव्रत साम का और

अग्नि यजु का समुद्र है। इसी में समुद्र रूपी विष्णु रहते हैं।

वेदों में यजु मण्डल में रहने वाला पुरुष है, वही मृत्यु है। साम के चारों ओर व्याप्त अमृत है यही साम है इससे घिरा होने के कारण मृत्यु भी कभी नहीं मरता। रस वेद के अनुसार तीनों वेद पदार्थ हैं अग्नि का चयन यजुर्वेद है वही अग्नि रस कहलाता है उसमें से बाहर जाने वाला तत्व ऋग्वेद है और अन्दर आने वाला तत्व साम वेद है।

प्रजापति के तीन अन्त है नाभि बिन्दु, मूर्ति पृष्ठ और बहीपृष्ठ नाभि बिन्दु वह है जिसका कोई आयाम नहीं जहां समस्त वस्तु भार हीन होती है। जब हम किसी वस्तु को छूना चाहते हैं तो जहां हमारा हाथ रुक जाता है वही मूर्ति पृष्ठ है, और जहां तक वस्तु दिखाई देती है वहीं तक बहि:पृष्ठ है। बहि:पृष्ठ धीरे धीरे बढ़ता है यही साम है यही विज्ञान है। पहले वृत्त की अपेक्षा, दूसरा वृत्त साम हो

१. अग्निर्जागारतमृच: कामयन्ते,अग्निर्जागार तमु सामानि।
अग्निर्जागार तमयं सोम आह, तवाहमास्मि सख्ये न्योका:। - ऋ. ४/२/२५

जाता है तथा पहला वृत्त ऋक् कहलाता है इन दोनों के बीच में यजु: है।

परमाणु से स्कन्ध बनते हैं परमाणु की महिमा बहुत कम होती है किन्तु स्कन्ध की महिमा बहुत अधिक होती है सूर्य की महिमा २५ करोड़ योजन है। व्यास के एक-एक परमाणु कम होने से आगे बढ़ती हुई रेखाएं जहां एक होकर परमाणु उत्पन्न कर देती है वही तक उसका महिमा मण्डल है। उसके आगे रसका बढ़ना बन हो जाता है। यही

छन्द वेद है, यही ऋक् है वह वाङ्.मय है इसमें पृथ्वी से तीन पदार्थ निकलते हैं, वाक्, गौ और द्यौ। इनसे रथन्तर वैरूप और शाक्वर पृष्ठ उत्पन्न होते हैं।.सूर्य से भी तीन पदार्थ निकलते हैं ज्योति गौ और आयु। ज्यौति से वृहत्, गौ से वैराज और आयु से रैवत बनता है। रथन्तर तक अग्नि व्याप्त है वैरूप तक प्रजन्य व्याप्त है और शक्वर साम तक भूः,भुवःस्वः तीनों लोक व्याप्त है वृहत् साम तक सूर्य की ज्योति है वैराज साम तक ऋतुओं तक का संबंध है और रैवत साम तक वह पशु है वे देवताओं के वाहन बनते हैं। इन सब सामों का परस्पर अतिमान होता रहता है पृथ्वी को केन्द्र मानकर सूर्य के बिम्ब तक व्याश्र मानकर जो वृत्त बनेगा वही रथन्तर होगा। इस दृष्टि से सूर्य भी पृथ्वी तक ही है। पृथ्वी के केन्द्र से कुछ हट कर जहां तक रथन्तर सोम है वहां तक का व्यासार्ध मानकर बनाया गया वृत्त वृहत् साम होगा वृहत् जहां पूर्ण होता है वहां तक पृथ्वी को केन्द्र मानकर बनाया गया साम वैराज साम होगा। इसी प्रकार यह साम बनते रहते हैं पृथ्वी के चारों ओर वायु है पहली वायु मिट्टी का भाग अधिक है वह बारह योजन तक है, दूसरी परत में सूक्ष्म वायु है और तीसरी परत में और भी सूक्ष्म वायु है तीसरी सूक्ष्मवायु को शक्वरी कहते है इसी से हमारी आयु बनी रहती है। यही स्वर्लोक है। भू और स्वर्लोक के बीच में अंतरिक्ष है वाक् पृथ्वी है गौ पृथ्वी के बाहर फैली हुई है और द्यौ पृथ्वी को चारों तरफ से घेरे हुए है इसी प्रकार सूर्य के भी तीन स्वर हैं पहला प्रकाश का, दूसरा वह भाग जिसे गौ कहतें हैं जिससे पृथ्वी पुष्ट होती है तीसरा वह भाग जिससे मस्तिष्क या डाले ऊपर की ओर उठे रहते हैं यही आयु है। इन छः पदार्थों से सृष्टि क्रम चलता है।

वेद विज्ञान के अनुसार प्रत्येक पदार्थ का तेजो मण्डल वृहत् साम तक स्थिर रहता है। इस प्रकार सम्पूर्ण पिण्ड एक साथ्र ही बनता है कोई तेज कहीं से निकल कर कहीं पहुंचता है यह धारण ठीक नहीं है। इस प्रकार चीयमान रस अग्नि यजुःवेद है निकलता हुआ रस महोक्थ ऋक् है आता हुआ रस महाव्रत साम है यह रस वेद का रूप हुआ। वितानवेद में कूटस्थ मूर्ति ऋक् है मण्डल साम हैं इन दोनों का समूह यजुः है। छन्दोवेद की दृष्टि से बाहर जाने वाला ऋक् अन्दर आने वाला साम है और दोनों में रहने वाला यजुः है। इन में भी छन्दोंवेद ऋक् है, वितानवेद साम है, रसवेद यजुः है। समस्त यज्ञ रस वेद से होता है क्योंकि उसमें अन्न, अन्नाद भाव रहता है। प्रत्येक पदार्थ का संकोच विस्तार वितानवेद से होता है छन्दोवेद के कारण पदार्थ कुछ दूरी के बाद दिखना बन्द हो जाता है।

वर्तमान विज्ञान के अनुसार चन्द्रमा तक ही मनुष्य की दृष्टि जाती है वस्तु स्थिति यह है कि सभी पदार्थ हमारे नेत्र के धरातल पर आकर दिखाई देते हैं।

सभी अपनी नाभि पर टिके हैं, वाक् प्राण के बिना और प्राण मन के बिना नहीं रहता। जहां तक मन का फैलाव है वहीं तक प्राण है यही तीनों साथ-साथ विस्तार करते हैं जो वस्तु होती है वही उपलब्ध होती है इसलिए वह वेद रूप ही है। यह वेद अपौरुषेय है

● भल्लूराम खीचर
जोधपुर